2 दिसम्बर 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (प्रथम), 2018 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 नवम्बर को भगवान महावीर निर्वाणोत्सव मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: नित्य-नियम पूजन के उपरान्त पंचतीर्थ जिनालय में एवं सीमंधर जिनालय में निर्वाण श्रीफल समर्पित किया गया। तत्पश्चात् डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा '**भगवान महावीर के सिद्धांत**' विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ। साथ ही गुरुदेवश्री का मांगलिक प्रवचन एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का दीपावली विषय पर वीडियो प्रवचन भी आयोजित हुआ। सभी कार्यक्रम डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुये।

(2) देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में दिनांक 4 से 8 नवम्बर तक महावीर निर्वाणोत्सव, नियमसार महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ आदि विद्वानों द्वारा अलग-अलग विषयों पर व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। पूजन-विधान का कार्य पण्डित दीपकजी धवल भोपाल व पण्डित उर्विशजी शास्त्री देवलाली द्वारा संपन्न हुआ। कार्यक्रम में लगभग 800 साधर्मियों ने लाभ लिया।

(3) मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट, अलीगढ एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 5 से 10 नवम्बर तक भगवान महावीर निर्वाणोत्सव एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री के वीडियो प्रवचन के पश्चात् पण्डित विमलदादा झांझरी द्वारा नियमसार, ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा 'मेरा सहज जीवन' एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा पाँच लब्धि, पंच परावर्तन व तीन लोक विषय पर प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में मंगलार्थी स्वाध्याय, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित धर्मेन्द्रजी कोटा, पण्डित अजितजी अचल एवं डॉ. जयंतीलालजी द्वारा एक-एक व्याख्यान हुए। तत्पश्चात् पण्डित संजयजी शास्त्री द्वारा रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर कक्षा का लाभ मिला। प्रात:कालीन प्रौढ कक्षा पण्डित सचिनजी शास्त्री द्वारा पाँच भावों पर ली गई। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति, व्याख्यानमाला के अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त पण्डित अरिहंतजी झांझरी उज्जैन, पण्डित नगेशजी जैन पिड़ावा, पण्डित संजीवजी जैन दिल्ली, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित सचिनजी जैन, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री आदि विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

शिविर में 170 तीर्थंकर मंडल विधान का आयोजन 7 नवम्बर को कृत्रिम कैलाश पर्वत पर कृत्रिम पावापुरी की रचना में पण्डित संजयजी शास्त्री द्वारा पण्डित सुधीरजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्रीफल चढाकर भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक मनाया गया, जिसमें पण्डित संजयजी शास्त्री द्वारा निर्वाण का अद्भुत दृश्य दिखाया गया। शिविर एवं विधि-विधान का समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री एवं संयोजन पण्डित सुधीरजी शास्त्री ने किया।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 10 नवम्बर को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा मंगलायतन से लौटते हुए मथुरा चौरासी में हो रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के दौरान गर्भ कल्याणक के दिन सायंकाल मार्मिक प्रवचन हुआ।

(4) दिल्ली : यहाँ न्यू उस्मानपुर नगर के श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में दिनांक 5 नवम्बर को '**वीर निर्वाणोत्सव**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. अनेकान्तजी जैन दिल्ली (जैनदर्शन विभागाध्यक्ष-लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली) ने की। इस अवसर पर ऋषभजी शास्त्री, अमनजी शास्त्री, शुभमजी शास्त्री, सन्देशजी जैन, तुषारजी जैन, संयमजी जैन, हिमांशुजी जैन, आत्मार्थी श्रुति जैन, आयुषी जैन, शाश्वत साक्षी जैन द्वारा अपना वक्तव्य दिया गया। गोष्ठी का निर्देशन पण्डित ऋषभजी शास्त्री ने एवं संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री ने किया।

(5) खड़ैरी (म.प्र.) : यहाँ दीपावली के अवसर पर श्री टोडरमल

(शेष पृष्ठ 6 पर...)

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

18

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

(१) तार्किक शिरोमणि स्वामी समन्तभद्राचार्य ने लिखा भी है –''हे नाथ! न आपको पूजा से कोई प्रयोजन है और न निन्दा से; क्योंकि आप समस्त बैर-विरोध का परित्याग करके परम वीतराग हो गये हो, तथापि आपके पवित्र गुणों का स्मरण हमारे चित्त को पापों से मुक्त करके पवित्र कर देता है।''[१]

(२) कुन्दकुन्दाचार्य स्वयं लिखते हैं –

''जो नित्य है, निरंजन है, शुद्ध हैं तथा तीनलोक के द्वारा पूजनीय हैं – ऐसे सिद्ध भगवान मुझे ज्ञान-दर्शन व चारित्र में श्रेष्ठ भाव की शुद्धता दो।''[२]

इसीप्रकार और भी देखिये –

(३) तीर्थ और धर्म के कर्ता श्री वर्द्धमान स्वामी को नमस्कार हो।[३]

(४) तीनों लोकों के गुरु और उत्कृष्टभाव के अद्वितीय कारण हे जिनवर! मुझ दास के ऊपर ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे मुझे मुक्ति प्राप्त हो जावे। हे देव ! आप कृपा करके मेरे जन्म (संसार) को नष्ट कर दीजिए यही एक बात मुझे आपसे कहनी है, चूँकि मैं इस संसार से अतिपीड़ित हूँ, इसलिए मैं बहुत बोल गया हूँ''[४] इत्यादि।

इसतरह हम देखते हैं कि व्यवहारनय द्वारा वीतरागी और सर्वथा अकर्ता भगवान के लिए कर्तृत्व की भाषा का प्रयोग व्यवहारनय से असंगत नहीं है। जिनवाणी में ऐसे प्रयोग सर्वत्र हैं।

बोलचाल की भाषा में ऐसा कहना व्यवहार है; किन्तु जैसा कहा, उसे वैसा ही मान लेना मिथ्यात्व है।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं – ''यद्यपि वीतरागी परमात्मा को भी जिनवाणी में एवं स्तुति-पाठादि में पतितपावन, अधम-उधारक आदि विशेषण कहे हैं, सो फल तो अपने परिणामों का लगता है, अरहन्त तो उनको निमित्तमात्र है, इसलिए उपचार द्वारा वे विशेषण संभव होते हैं। अपने परिणाम शुद्ध हुए बिना अरहंत ही स्वर्ग-मोक्ष के दाता नहीं हैं।[१]

पण्डित श्री मिलापचन्द रतनलाल कटारिया ने अपने शोधपूर्ण लेख में लिखा है कि ''मंत्र-तंत्रवादी भट्टारकों ने इस सरल और वीतराग स्तोत्र को भी मंत्र-तंत्रादि और कथाओं के जाल से गूँथकर जटिल और सराग बना दिया है, इसके निर्माण के संबंध में भी प्राय: मनगढ़ंत कथायें रच डाली हैं।

ये निर्माण-कथायें कितनी असंगत, परस्पर विरुद्ध और अस्वाभाविक हैं – यह विचारकों से छिपा नहीं है। किसी कथा में मुनि श्री मानतुङ्ग को राजा भोज का समयवर्ती बताया है तो किसी में कालिदास का तथा किसी में बाण, मयूर आदि के समय का बताया है, जो परस्पर विरुद्ध हैं।

राजा ने कुपित होकर मुनिश्री मानतुंग को ऐसे कारागृह में बन्द कर दिया, जिसमें ४८ कोठे थे और प्रत्येक कोठे के दरवाजे में एक-एक ताला था – ऐसा जो एक कथा में बताया है, यह भी विचारणीय है; क्योंकि प्रथम तो वीतराग जैन साधु को जिसके पास कोई शस्त्रादि नहीं, कैसे कोई राजा ऐसा अद्भुत दण्ड दे सकता है ? और फिर ऐसा विलक्षण कारागार भी संभव नहीं है। जिसमें एक के अन्दर एक – ऐसे ४८ कोठे हों। सही बात तो यह है कि ४८ छन्द होने से बिना सोचे-विचारे ४८ कोठे और ४८ तालों की संख्या लिख दी है, यदि छन्द कम-ज्यादा होते तो कोठे भी कम-ज्यादा हो जाते। श्वेताम्बर ४४ छन्द ही मानते हैं, अत: उन्होंने बन्धन भी ४४ ही बताये हैं। इसतरह उन कथाओं में और भी अनेकानेक विसंगतियाँ हैं, जो थोड़े से विचार से ही पाठक समझ सकते हैं।''[२] (क्रमश:)

१. न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे:, न निन्दया नाथविवान्त वैरे।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नं पुनाति चित्तं दुरिताञ्जनेभ्य: ।।५७।।
– वासुपूज्य स्तुति, वृहत्स्वयंभू स्तोत्र

२. दितु वर भावशुद्धिं दंसण णाणे चरित्तेय। – भावपाहुड़ १६३

३. पणमामि बड्ढ़माणं तित्थं धम्मस्स कत्तारं। – प्रवचनसार, गाथा १

४. त्रिभुवनगुरो जिनेश्वर परमानन्दन्दैककारणं कुरुष्व।
मयि किंकरेऽत्र करुणां यथा जायते मुक्ति: ।।१।।
अपहर मम जन्म दयां कृत्वेत्येकत्र वचसि वक्तव्ये।
तेनातिदग्ध इति मे देव वभूव प्रलापित्वम् ।।६।।
– पद्मनन्दी पंचविंशति, करुणाष्टक

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, अध्याय ७, पृष्ठ २२२

२. जैन निबन्धरत्नावली, पृष्ठ ३३७

विशेष उपलब्धि

जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व पर धूपदशमी के दिन 'निमित्त उपादान' विषय पर आयोजित झांकी को राजस्थान युवा जैन मण्डल जयपुर द्वारा प्रथम स्थान का पुरस्कार दिया गया। झांकी से संबंधित पूरी टीम एवं टोडरमल महाविद्यालय को हार्दिक बधाई!

कविता

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में –

हरदास पिता के ज्येष्ठ पुत्र, जो जग के उपकारी हैं।
शुद्धातमजी पुत्र आपके, यथा नाम गुणधारी हैं।।
रतनचंद है नाम आपका, दादाजी कहलाते हो।
रत्नाकरसम गंभीर आप, रत्नों की जोत जलाते हो।।
बरोदास्वामी में जन्म हुआ, खुशहाली से छाया अम्बर।
मन पुलकित होने लगता, आता जब 21 नवम्बर।।
अनुवाद रचना सम्पादन, ऐसे आपके ग्रंथ अनेक।
सरल भाषा में अनुबद्ध है, करता हूँ उनका उल्लेख।।
गुजराती से हिन्दी किया, और सम्पादन का किया है काम।
अभूतपूर्व हैं वे कृतियाँ, अब सुन लो पहले उनके नाम।।
समाधि शतक, पदार्थ विज्ञान, सम्यग्दर्शन अरु भक्तामर।
इन सबको समझाया, मानो भर दिया गागर में सागर।।
कहान गुरु ने छुपे हुए, जिस गूढ रहस्य को बतलाया।
दादा ने गुजराती से हिन्दी में, उस रहस्य को समझाया।।
दूर हो गई सब शंकाएं, अब हो गया सब कुछ स्पष्ट।
गुजराती से हिन्दी कर दिया, लगभग 6 हजार कुल पृष्ठ।।
अहिंसा महावीर की दृष्टि में, क्या है जन को बतलाया।
अहिंसा के पथ पर उन्होंने, चलना हमको सिखलाया।।
गुणस्थान विवेचन बतलाकर, विचित्र महोत्सव बतलाया।
प्रवचन रत्नाकर का अमृत बरसाकर, धर्म–पुष्प खिलाया।।
ये हुआ गुजराती से हिन्दी और संपादक का काम।
सुनलो अब दादाजी की, मौलिक कृतियों के सब ही नाम।।
साधना समाधि और सिद्धि, सर्वोत्कृष्ट काम है जीवन का।
सरल साहित्य को लिखा आपने, दूर किया संशय मन का।।
चलते–फिरते सिद्धों से गुरु ने, सुखी जीवन मार्ग बतलाया।
द्रव्यदृष्टि का विषय बताकर, जिनपूजन का रहस्य बतलाया।।
शलाका पुरुष, हरिवंश कथा और क्षत्रचूड़ामणि परिशीलन।
पंचास्तिकाय पद्यानुवाद और लिखा षट्कारक अनुशीलन।।
समयसार मनीषियों की दृष्टि में, बोलो किसने बतलाया।
जम्बू से जम्बूस्वामी तक, पूरा चरित्र है बतलाया।।
नींव का पत्थर आपहि हो, आपहि हो पहली पाठशाला।
जब से मैंने होश सम्हाला, पढी बालबोध पाठमाला।।
जिन खोजा तिन पाईयां, वह मुक्तिपुरी को जायेगा।
गर रहा संस्कार साथ तो, पर से एकत्व हट जायेगा।।
णमोकार महामंत्र को समझो, कर लो पंच प्रभु का ज्ञान।
तीर्थंकर स्तवन भी कर लो, कर लो आत्मप्रभु का ध्यान।।
पर में सुख को खोजा मैंने, निज में ही अब खोज रहा हूँ।
कर्ता माना पर को मैंने, अब जान रहा हूँ देख रहा हूँ।।
पर में सुख माने मूढ हुए, पर से कुछ भी संबंध नहीं।
ऐसे क्या पाप किये हमने ये तो कभी सोचा ही नहीं।।
सामान्य श्रावकाचार न जाने, सोचो उनका क्या होगा।
यदि चूक गये तो इस भव, इन भावों का फल क्या होगा।।
'अमित' अनादि भव सागर में, संसार दु:खों का मेला है।
जो कुछ करना जल्दी कर लो, जीवन विदाई की बेला है।।

– अमित शास्त्री, गुना

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का –

86वाँ जन्मदिन मनाया

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 21 नवम्बर को पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (बड़े दादा) का 86वाँ जन्मदिन मनाया गया, जिसमें स्मारक के समस्त अधिकारियों एवं छात्रों द्वारा बड़े दादा का स्वागत किया गया एवं शुभकामनाएं दी गई।

सभा में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, अच्युतकांतजी शास्त्री, रमेशचंदजी शास्त्री, सुदर्शनजी, श्रीशांतजी आदि महानुभाव उपस्थित थे।

डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हम न केवल भाई हैं अपितु साधर्मी भाई हैं; यह साधर्मी वात्सल्य निरंतर बढता रहे। अंत में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं सभी से अपेक्षा करता हूँ कि तत्त्वज्ञान को जीवन्त रखें। सभा का संचालन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

काटोल (महा.) से पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में लिखते हैं कि –

"कौन कहता है वर्तमान युग में राम-लक्ष्मण जैसा भ्रातृ-प्रेम नहीं है"

विगत 21 नवम्बर को बड़े दादा (पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल) के जन्मदिन पर छोटे दादाजी (डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल) का बचपन से लेकर मरणपर्यंत तक के भाव को सुनकर मुझे ऐसा लगा कि इस वैज्ञानिक युग में भी राम और लक्ष्मण जैसा एक दूसरे पर स्नेह रखने वाले यदि कोई है तो वे हैं बड़े दादा एवं छोटे दादा।

डॉ. भारिल्ल का बचपन से लेकर अभी तक लौकिक एवं आध्यात्मिक जीवन में एक दूसरे को प्रोत्साहन देना, प्रेरणा देना और साथ–साथ लेकर चलना – यह अलौकिक स्नेह सभी के लिये एक आदर्श है। हम सभी का वात्सल्य भाव ऐसा ही होना चाहिये।

इस प्रसंग पर मैं यही मंगल भावना भाता हूँ कि दोनों शतायु हों और माँ जिनवाणी की सेवा युगों–युगों तक करते रहें। **–आपका लघुनंदन**

हार्दिक बधाई !

जयपुर (राज.) : यहाँ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में दिनांक 29 अक्टूबर को आयोजित राज्यस्तरीय चयन प्रतियोगिताओं में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर स्थान प्राप्त किये। प्रतियोगिताओं का नाम व प्राप्त स्थान का विवरण निम्नानुसार है :– मंथन जैन – जैन एवं बौद्ध न्याय भाषण (प्रथम स्थान), मंथन जैन – समस्या पूर्ति (प्रथम स्थान), अमन जैन – जैन एवं बौद्ध न्याय भाषण (द्वितीय स्थान), नयन जैन – समस्या पूर्ति (तृतीय स्थान)।

इस उपलब्धि हेतु टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (22)

अपने अस्तित्व का दृढ निर्णय होना अपरिहार्य है

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आत्मा के (स्वयं अपने) अस्तित्व से इन्कार तो हमारी दुर्गति का साक्षात् कारण है ही; पर मात्र आज्ञानुसारी बनकर आधे मन से आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार कर लेना भी कार्यकारी नहीं है। हमें आत्मा के अस्तित्व का संशय रहित दृढ श्रद्धान होना चाहिये, ठीक वैसा ही जैसा हमें अपने मनुष्य होने और ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' होने के प्रति है। क्या हमें आज तक अपने मनुष्य या ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' होने में संदेह हुआ है, सपने में भी? नहीं न!

यदि हम गहरी नींद में भी हों, बाहर नगाड़े भी बज रहे हों तब भी हमारी तंद्रा (नींद) नहीं टूटती हो, ऐसे में कोई अत्यंत धीमी आवाज में भी हमें हमारा नाम बोलकर पुकारे तो हम तुरंत उठ खड़े होते हैं; क्योंकि उस गहन तन्द्रा में भी हमारा यह अहसास, यह विश्वास जागृत है कि मैं ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' हूँ।

हमें जैसा दृढ श्रद्धान अपने ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' होने का है वैसा ही दृढ श्रद्धान अपने ''त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा'' होने का होना चाहिये। मात्र इतना ही नहीं हमें स्पष्ट भेदविज्ञान होना चाहिये कि **मैं मात्र आत्मा (जीव द्रव्य, जीव तत्त्व) हूँ तथा मैं ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' नहीं हूँ। यह ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' तो दो द्रव्यों की मिलीजुली असमानजाति द्रव्य पर्याय है जो क्षणिक है, विनाशी है और कुछ समय में नष्ट हो जायेगी।** मैं (आत्मा) भी रहूँगा और वे पुद्गल परमाणु भी रहेंगे, जिनसे यह शरीर बना है; पर यह ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' नहीं रहेगा। बोल तुझे क्या होना मंजूर है, जो नष्ट हो जाने वाला है वह या जो अनंतकाल तक रहने वाला है वह?

हम अपने आपको युवा कहते और मानते हैं एवं इस पर गर्व का अनुभव करते हैं, तो क्या सचमुच हम युवा हैं, क्या यौवन सदा बना रहेगा? यदि नहीं तो क्या यौवन नष्ट होते ही हम भी नष्ट हो जायेंगे, नहीं न?

यौवन नष्ट हो जायेगा, पर हम तब भी बने रहेंगे। इसका मतलब साफ है कि हम युवा नहीं कुछ और हैं। हम वह हैं जो सदा रहेगा। हमारे बने रहते भी जो नष्ट हो जाये, वह मैं कैसे हो सकता हूँ?

बस! जिस प्रकार मैं युवक नहीं हूँ, उसी प्रकार मैं ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' भी नहीं हूँ; क्योंकि एक दिन यह ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' नहीं रहेगा; पर मैं तो तब भी बना रहूंगा। **तात्पर्य यह है कि मैं सिर्फ वही हूँ जो अनादि से है और अनंतकाल तक रहेगा। जो कल था, पर आज नहीं है अथवा आज है और कल नहीं रहेगा, आखिर वह मैं कैसे हो सकता हूँ; क्योंकि मैं तो कल भी था, आज भी हूँ और कल भी रहूँगा।**

उक्त प्रकार के चिन्तनपूर्वक हमें यह दृढ निर्णय होना आवश्यक है कि मैं ''परमात्मप्रकाश भारिल्ल'' मनुष्य या युवक नहीं हूँ, **मैं ''त्रिकाली, ध्रुव, अविनाशी, ज्ञान और आनन्द स्वभावी जीव द्रव्य हूँ, जो आत्मा कहलाता है''।**

जब तक हम अपने आपको यह या वह मानते रहेंगे और ''आत्मा'' स्वीकार नहीं करेंगे, तब तक हमारा कल्याण होना असंभव है।

क्यों?

क्योंकि यह तो हमें प्रत्यक्ष दिखाई देता है कि मैं एक मनुष्य, युवक, परमात्मप्रकाश हूँ और मुझे इस बारे में कोई संदेह नहीं है; परन्तु हमारे श्रद्धान में अपने आत्मा होने के बारे में संशय ही बना रहता है, इस विषय में हमारे श्रद्धान में दृढता नहीं आती है, तब स्वाभाविक ही है कि हमारे चिन्तन, चिंता और कर्तृत्व का विषय प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला ''मनुष्य, युवक, परमात्मप्रकाश'' ही बनेगा, अभी तक मात्र हमारी कल्पना का विषय ही बना हुआ भगवान आत्मा नहीं। जब तक ''आत्मा'' हमारे चिन्तन का विषय न बने तब तक आत्मकल्याण कैसे हो?

हमारे चिन्तन और कर्तृत्व का विषय आत्मा बने इसके लिये यह आवश्यक एवं अपरिहार्य है कि हमारा यह दृढ निर्णय हो कि मैं आत्मा हूँ (अन्य कुछ भी नहीं)। यहाँ मात्र आत्मा नाम ही पर्याप्त नहीं है, वरन् यह भी अत्यंत आवश्यक है कि जहाँ–जहाँ आत्मा की चर्चा हो हमें यह भावभासन होना चाहिये कि ''आत्मा'' मतलब ''अखण्ड–अनंत, अनादि–अनंत, अनंत गुणों का पिण्ड, त्रिकाली ध्रुव, ज्ञानानन्द स्वभावी, जीव द्रव्य'' है।

अब सबसे प्रमुख प्रश्न यह है कि आत्मा के स्वरूप का निर्धार कैसे हो?

जगत में आत्मा के स्वरूप के बारे में अनेकों मान्यताएं प्रचलित हैं, उनमें से कौन सही है और कौन गलत इस बात का निर्णय होना अत्यंत आवश्यक है।

आत्मा के स्वरूप की अलग–अलग व्याख्या करने वाले विभिन्न लोग अपने आप्त (भगवान) होने का दावा करते हैं और अपने आपको सत्य ठहराते हैं। यहाँ एक बात उल्लेखनीय है कि वे सभी आत्मा का जो स्वरूप बतलाते हैं, वह परस्पर विरुद्ध है, ऐसे में वे सभी तो सही हो ही नहीं सकते हैं। उनमें से मात्र एक ही सही हो सकता है और अन्य सभी गलत। तब सही कौन है इस बात का निर्णय मात्र तर्क एवं युक्ति के आधार पर ही हो सकता है। इसके लिये जागृत विवेक की आवश्यकता है।

जगत के अधिकतम दर्शन यही कहते हैं कि हम सभी किसी एक सर्वशक्तिमान परमात्मा के अंश हैं। हम उसी में से आये हैं और अंतत: जाकर उसी में मिल जायेंगे, विलीन हो जायेंगे।

प्रथम दृष्ट्या ही यह बात असंगत प्रतीत होती है।

वर्तमान पर्याय में तो हम सभी आधे–अधूरे हैं, पामर और दरिद्री हैं। यदि हम किसी सर्वशक्तिमान परमात्मा के अंश हैं तो हम भी उसी के समान सर्वशक्तिमान होने चाहिये न? आखिर सोने का अंश सोना ही तो होगा, माटी कैसे हो सकता है?

आज हम सभी संसार में भटकते हुए असीम दु:ख भोग रहे हैं, तो वह सर्वशक्तिमान परमात्मा ने अपने ही अंशों को इसप्रकार दु:खी होने के

लिये क्यों छोड़ दिया है?

जब हम सभी उसी एक के अंश हैं तो हम सभी एक जैसे ही होने चाहिये न, हम सभी में फर्क क्यों है? हम सभी के विचारों, आचरण, व्यवहार, चरित्र और हैसियत में फर्क क्यों है?

जब हम सभी उसी परमात्मा के बनाये हुए हैं या उसी के अंश हैं तो जगत में ईशनिंदक और नास्तिक लोग क्यों हैं?

हम सभी एक दूसरे का विरोध क्यों करते हैं? एक दूसरे से झगड़ते क्यों हैं? क्या किसी पिता को अपने ही पुत्रों का आपस में झगड़ना इष्ट हो सकता है? नहीं न! तो क्यों नहीं वह सर्वशक्तिमान परमात्मा अपने ही अंशों को आपस में झगड़ने से, मारकाट करने से रोकता है?

जिस राजा के राज्य में प्रजा दु:खी हो, चारों ओर लड़ाई-झगड़ा, मारकाट, भुखमरी, लूटपाट, अन्याय और अनीति का बोलबाला हो, अभाव हों - वह राजा कैसा होगा? उक्त सभी लक्षण उसकी कमजोरी के लक्षण हैं या सक्षमता के?

जब हमें ऐसा शासक स्वीकार नहीं तो ऐसा (सर्वशक्तिमान) परमात्मा कैसे स्वीकार हो सकता है?

अब हम जाकर फिर उसी में (परमात्मा में) मिल जायेंगे तो क्या वह भी हमारे ही समान मलिन, रुग्ण (बीमार) और दु:खी नहीं हो जायेगा?

कुछ लोग कहते हैं कि हम लोग जिस प्रकार के अच्छे-बुरे कृत्य करते हैं, वह परमात्मा हमें उसी के अनुरूप अच्छे-बुरे फल देता है। मैं पूछता हूँ कि जब वही सर्वशक्तिमान है और उसकी मर्जी के बिना पत्ता ही नहीं हिलता है तब हमसे ये अच्छे-बुरे कृत्य कौन करवाता है? वही न! तब पुरस्कार या सजा का हकदार कौन हुआ? वही न! भला हमारा इसमें क्या दोष?

कहने का तात्पर्य यह है कि जगत में दिखाई देने वाले परिणमन और घटनाओं में व्याप्त अव्यवस्था और विरोधाभासों को देखते हुए जगत की रचना और संचालन में किसी सर्वशक्तिमान शक्ति की भूमिका होने की कल्पना निराधार ही प्रतीत होती है। जगत में बहुतायत लोगों की उक्त मान्यता अनुपयुक्त, असंगत और अतार्किक प्रतीत होती है। यदि सभी परिप्रेक्ष्य में गहराई से विचार किया जाये तो जैनदर्शन में वर्णित प्रत्येक द्रव्य की अनादि-अनन्तता, स्वतंत्रता, सम्पूर्णता और स्वतंत्र परिणमन ही एकमात्र सत्य सिद्ध होता है।

उक्त प्रकार से तर्क और युक्ति के अवलम्बन से जिनागम में वर्णित आत्मा के स्वरूप का संशय और विपर्यय से रहित सच्चे स्वरूप का दृढ निर्णय होना आत्मकल्याण की पूर्व शर्त है। ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 नव. से 2 दिस.	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा
7 से 12 दिसम्बर	अहमदाबाद	पंचकल्याणक
19 से 24 दिसम्बर	गौरझामर	पंचकल्याणक
26 दिस.से 1 जन.2019	जयपुर	विदेशियों हेतु शिविर
16 से 21 जनवरी 2019	हेरले	पंचकल्याणक

श्री सिद्धचक्र मंडल विधान संपन्न

मुक्तागिरि–बैतूल (म.प्र.) : महाराष्ट्र-मध्यप्रदेश की सीमा पर सतपुड़ा पर्वतमाला में स्थित दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि पर दिनांक 9 से 15 नवम्बर तक नागपुर पारिवारिक यात्रा संघ तथा नखाते परिवार द्वारा स्व. आदिनाथजी नखाते एवं बंधु श्री विमलनाथजी नखाते की स्मृति में श्री सिद्धक्षेत्र महामंडल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन रात्रि में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा श्री सिद्धचक्र मंडल विधान की जयमाला के आधार से प्रवचन हुए। उसके पूर्व पंडित संयमजी शास्त्री भोपाल के भी सिद्धचक्र विधान क्या, क्यों, कैसे, कब आदि प्रश्नों के उत्तर देने रूप चर्चात्मक प्रवचन हुए। इसी प्रकार दिल्ली के यात्रासंघ के साथ पधारे पण्डित सुबोधजी 'ज्ञाता' सिवनी एवं पण्डित श्रुतेशजी सातपुते शास्त्री का भी एक-एक प्रवचन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी जैन 'सरस' के नेतृत्व में संपन्न हुए। इस अवसर पर संस्कार तीर्थ शाश्वतधाम उदयपुर के अध्यक्ष श्री अजितभाई जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती अनिता जैन बडोदरा, श्री शांतिनाथ जैन पुणे की प्रमुख उपस्थिति रही। उन्होंने तन-मन-धन से सहयोग कर मंगल प्रभावना की।

इस आयोजन में मुम्बई, पुणे, नागपुर, अमरावती, परतवाडा, वर्धा, अंजनगाव, अचलपुर, बैतूल, मुलताई आदि स्थानों से अनेक साधर्मीजन उपस्थित हुए। उक्त सात दिवसीय आयोजन में भजनसंध्या, गीतगायन स्पर्धा, वक्तृत्व स्पर्धा तथा आध्यात्मिक-धार्मिक नाटक महासति चंदनबाला का मंचन सौ. जयश्री नखाते के निर्देशन में किया गया। इसी प्रकार क्रमबद्धपर्याय के सिद्धांत को प्रस्तुत करने वाले महासती मैनासुंदरी नाटक का मंचन नखाते परिवार द्वारा संचालित पाठशाला उच्च प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों द्वारा सौ. भक्ति नखाते के निर्देशन में किया गया। संपूर्ण आयोजन एवं गतिविधियों का संयोजन राजेंद्र नखाते ने किया।

सामूहिक शिक्षण शिविर संपन्न

बण्डा (म.प्र.) : यहाँ भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर श्री 1008 पंचबालयति दिगम्बर जिन स्वाध्याय मंदिर में वीतराग विज्ञान पाठशाला समिति एवं शास्त्री परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 4 से 11 नवम्बर तक बिनैका, कर्रापुर, दलपतपुर, बण्डा आदि स्थानों पर सामूहिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री एवं पण्डित रविन्द्रजी मड़देवरा का विशेष समागम प्राप्त हुआ। पण्डित विरागजी की संगीतमय कथा, बच्चों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम, शहपुरा (जबलपुर) एवं बड़ागांव में पाठशाला का संचालन आदि शिविर की विशेष उपलब्धियाँ रहीं। शिविर का संयोजन पण्डित अंकितजी शास्त्री, पण्डित मयंकजी सिद्धार्थी एवं पण्डित देवांशुजी शास्त्री ने किया।

गोष्ठी सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर में दिनांक 28 अक्टूबर को दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फैडरेशन के तत्त्वावधान में '**पारिवारिक बिखराव : समस्या व समाधान**' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में डॉ.विमलकुमारजी जैन, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं श्रीमती नीता बूचरा ने अपने विचार व्यक्त किये। गोष्ठी का संयोजन श्रीमती शशिसेन जैन, नवीनसेन जैन ने एवं संचालन डॉ. सोनाली एन. ठोलिया ने किया। समारोह की अध्यक्षता श्री राजेन्द्र के. गोधा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री गणेशजी राणा, श्री महेन्द्रजी पाटनी, श्री ज्ञानचंदजी झांझरी, श्री अनिल जैन (आई.पी.एस.) आदि महानुभाव उपस्थित थे।

शोक समाचार

(1) दिल्ली निवासी **श्रीमती प्रकाशवती जैन** माताश्री श्री आदीशजी जैन का दिनांक 22 नवम्बर को समाधिमरण की भावनापूर्वक 90 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की अनन्य भक्त थीं। पिछले 50 वर्षों से न केवल स्वयं स्वाध्याय किया अपितु अनेक स्वाध्याय सभाएं प्रारम्भ करवाईं। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 5000/– रुपये प्राप्त हुए।

(2) सहारनपुर (उ.प्र.) निवासी श्री अभिनन्दनप्रसादजी जैन (मफतलाल वाले) का दिनांक 17 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

जैन युवा शास्त्री परिषद् के निर्देशन में महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा 'चारित्तं खलु धम्मो' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें अंकित जैन, अभय जैन, चेतन जैन, अंकुर जैन, अनुज जैन, अरविन्द जैन, एकांश जैन, कु. खुशबू जैन, कु. प्रज्ञा जैन, कु. शिवानी जैन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

निर्णायक के रूप में पण्डित विमोशजी शास्त्री व पण्डित संजीवजी शास्त्री उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त पण्डित सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी द्वारा प्रात: नियमसार एवं रात्रि में कथाओं के माध्यम से स्वाध्याय का लाभ मिला।

दीपावली के दिन प्रात: प्रभातफेरी व निर्वाण श्रीफल का कार्यक्रम हुआ। रात्रि में 'दीवान अमरचंद : एक असाधारण व्यक्तित्व' नामक नाटक का मंचन पाठशाला के बच्चों द्वारा किया गया, जिसका निर्देशन मंगलार्थी विपिन जैन व कु. वर्षा जैन ने किया।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित गोष्ठियों के क्रम में दिनांक 28 अक्टूबर को '**अनेकान्त एवं स्याद्वाद**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सोमिल जैन दलपतपुर (शास्त्री तृतीय वर्ष), अतिशय जैन चौरई (शास्त्री प्रथम वर्ष) एवं सिद्धार्थ जैन लुकवासा (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण अरविन्द जैन खड़ैरी (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के नयन जैन बरायठा व श्रेणिक जैन ने किया।

दिनांक 18 नवम्बर को '**जिनागम के आलोक में क्रमबद्धपर्याय**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री संजयजी सेठी, जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पीयूष जैन टडा (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं आयुष जैन पिपरिया (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण सिद्धार्थ जैन ग्वालियर (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के शाश्वत जैन बड़ामलहरा व सन्मति जैन कर्रापुर ने किया।

दिनांक 21 नवम्बर को '**कर लो जिनवर की पूजन** ' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित मनीषजी कहान, जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में यश जैन खुरई (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं आर्जव मोदी विदिशा (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण हर्षित जैन दमोह (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के रजत जैन कापरेन व विनीत जैन मुम्बई ने किया।

ज्ञातव्य है कि यह गोष्ठी पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में उनकी कृति 'जिनपूजन रहस्य' के आधार पर संपन्न हुई।

दिनांक 23 नवम्बर को '**पंचभाव : एक अनुशीलन**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता विदुषी प्रतीति पाटील, जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चेतन जैन गुढाचन्द्रजी (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं तुषार जैन दिल्ली (उपाध्याय वरिष्ठ) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण आदित्य जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अनुभव जैन खनियांधाना व श्रेणिक लट्ठे ने किया।

गोष्ठियों का आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

विशेष प्रोजेक्ट

टोडरमल महाविद्यालय के शास्त्री प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार के सम्यग्दर्शन अधिकार पर आधारित विशेष प्रोजेक्ट जिनकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में तैयार कर प्रदर्शनी लगायी गयी। इसका उद्घाटन दिनांक 13 नवम्बर को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री अरुणजी कासलीवाल की उपस्थिति में हुआ। सभी महानुभावों ने प्रदर्शनी देखकर छात्रों की बहुत प्रशंसा की। **– जिनेन्द्र शास्त्री, जयपुर**

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्त्वप्रचार

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर प्रतिदिन प्रात: 6.30 से 7.00 तक

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें - www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें -
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

डॉ. भारिल्ल के नवीन प्रकाशन

समयसार विधान (मूल्य-35, पृष्ठ-240)
नियमसार विधान (मूल्य-25, पृष्ठ-232)
प्रवचनसार विधान (मूल्य-20, पृष्ठ-112)
अष्टपाहुड विधान (मूल्य-25, पृष्ठ-182)
चौबीस तीर्थंकर विधान (मूल्य-5, पृष्ठ-32)
योगसार विधान (मूल्य-8, पृष्ठ-56)

छपकर तैयार है।

-: संपर्क सूत्र :-
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15
फोन-0141-2705581, 2707458;
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

अवश्य पधारिये महामुनिराज आचार्य कुन्दकुन्द देव की तपोभूमि पोन्नूर मलै में मंगल आयोजन **तपोभूमि पोन्नूर**

जिनदेशना आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

बुधवार, 27 मार्च से रविवार, 31 मार्च 2019

विद्वत् सान्निध्य : ❀ पण्डित देवेन्द्र कुमार जी जैन, बिजौलिया ❀ पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट ❀ डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ

विशेष आकर्षण :- ◆ आचार्य कुन्दकुन्द की तपो एवं विदेह गमन भूमि पोन्नूर एवं आसपास के अनेक प्राचीन जिनमंदिरों के दर्शन ◆ सीमन्धर भगवान के मनोहारी दर्शन एवं पूजन विधान का मधर आयोजन प्राकृतिक एवं शांत वातावरण में जिनवाणी की अमृत देशना ◆ पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन एवं उसके रहस्यों का लाभ ◆ अन्य समागत विद्वानों का प्रासंगिक लाभ

संयोजक - विराग शास्त्री, जबलपुर मो. 9300642434, email: kahansandesh@gmail.com

कार्यक्रम स्थल : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर, कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूर मलै, तिरुवल्लुवर इंजीनियरिंग कॉलेज के पास, तह. वन्देवासी, वडक्कमवाडी जि. तिरुवण्णामलै 604505

निवेदक : श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले मुम्बई

विशेष : इस शिविर में सहभागिता करने के इच्छुक साधर्मी संयोजक से सम्पर्क करें। स्थान सीमित होने से सीमित साधर्मियों को पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जायेगा। कार्यक्रम 27 मार्च को दोपहर से प्रारम्भ होगा।

पोन्नूर- चेन्नई से 130 किमी, बैंगलोर से 300 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी, चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है। चेन्नई के कोयम्बडु बस स्टेण्ड से पोन्नूर (वाया वंदेवासी) के लिये सरकारी बस क्रमांक 148, 208, 422 उपलब्ध रहती हैं।

पोन्नूर आवागमन के सम्बन्ध में आप निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें -
पोन्नूरमलै - 04183-291136, 9489360976, मो. 09976975074 चेन्नई सम्पर्क - श्री दीपक कामदार : 09383370033

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

देवलाली-नासिक (महा.) : पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर डॉ. सुशीलाबेन-नवीनभाई तेजानी परिवार अमेरिका द्वारा अष्टपाहुड विधान एवं Mumukshu Of North America (MONA) द्वारा शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर ब्र.हेमचंदजी हेम देवलाली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित अरुणजी बण्ड जयपुर, श्री प्रकाशभाई कलकत्ता, श्री चेतनभाई राजकोट आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। पूजन-विधान के समस्त कार्य पण्डित दीपकजी 'धवल' भोपाल एवं पण्डित उर्विशजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये। कार्यक्रम केा संयोजन एवं संचालन श्री रजनीभाई गोसलिया ने किया।

सागर (म.प्र.) : यहाँ मकरोनिया में पर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा प्रात: समयसार निर्जरा अधिकार, दोपहर में गोम्मटसार लेश्या मार्गणा एवं सायंकाल रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार पर सम्यग्दर्शन के आठ अंग विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त एक दिन दलपतपुर में भी व्याख्यान हुआ।

अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मंडी स्थित वीतराग विज्ञान भवन सीमंधर जिनालय में पर्व के अवसर पर पण्डित प्रकाशचंदजी झांझरी उज्जैन द्वारा प्रात: आत्मसमाधि पर प्रवचन, दोपहर में कक्षा व शंका-समाधान एवं रात्रि में समयसार के कर्ताकर्म अधिकार व संवर अधिकार पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर पण्डित यशजी शास्त्री पिड़ावा के निर्देशन में श्री समाधि शतक मंडल विधान का आयोजन हुआ। **- प्रकाश पांड्या**

कहानी लेखन प्रतियोगिता

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नैतिक/आध्यात्मिक/प्रेरक/सामाजिक विषयों को लेकर आधुनिक भाषा-शैली में कहानियाँ समाज को उपलब्ध कराई जा सके, इसलिये 'समर्पण' द्वारा कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है।

- कहानी स्वलिखित, अप्रकाशित एवं 200 शब्दों में होनी चाहिये।
- कहानी राजनीति या किसी व्यक्ति विशेष पर कटाक्ष न करती हो।
- निर्णायकों का निर्णय अन्तिम होगा।
- प्रथम 3 विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार दिया जायेगा।
- अन्य समस्त योग्य कहानियों का भी संस्कार सुधा व पुस्तक के रूप में प्रकाशन किया जायेगा। लेखक को 5 प्रतियाँ नि:शुल्क दी जायेंगी।
- कम से कम 15 कहानियाँ आने पर ही प्रतियोगिता होगी, अन्यथा मात्र पत्रिका में प्रकाशन किया जायेगा।
- कहानी भेजने हेतु अंतिम तिथि 15 दिसम्बर है।

आप अपनी कहानी 9511330455 पर वाट्सएप या samarpan1008@gmail.com पर मेल कर सकते हैं।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी -

समाधि दिवस मनाया

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के समाधि दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 13 नवम्बर को विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील उपस्थित थे। मंचासीन अतिथियों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री अरुणकुमारजी कासलीवाल, श्रीमती कमला भारिल्ल उपस्थित थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सहज जैन पिड़ावा ने किया। तत्पश्चात् शास्त्री प्रथम से पवित्र जैन, संयम जैन व प्रियांश जैन ने, शास्त्री द्वितीय वर्ष से सम्मेद खोत एवं शास्त्री तृतीय वर्ष से कु. श्रुति जैन व अमन जैन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। साथ ही स्वप्निल जैन, अर्पित जैन व समर्थ जैन ने कविता के माध्यम से टोडरमलजी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में कहा कि टोडरमलजी का आध्यात्मिक क्षेत्र में योगदान तो अभूतपूर्व है ही, साथ ही साथ हिन्दी साहित्य के गद्य विधा को उन्होंने ऊँचाई पर पहुंचाया है, जिसे परवर्ती हिन्दी विद्वानों ने सम्मानपूर्वक स्मरण किया है तथा अधिकाधिक लोगों तक जिनवाणी को पहुंचाने के उद्देश्य से उन्होंने अपनी रचनाएं ब्रज भाषा में बनाई।

संचालन सोमिल जैन दलपतपुर ने एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com